नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में भदंत आनंद कौसल्यायन जयंती

समता के प्रवर्तक थे डॉ. कौसल्यायन – भंदत विमलकित्ती गुणसिरी

वर्धा दि. 6 जनवरी 2016: डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन एक आदर्श जीवन के प्रतीक थे।

उन्होंने अपना जीवन हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगाया। वे समता के प्रवर्तक थे। उक्त विचार भदंत विमलकित्ती गुणसिरी, नागपुर ने व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित द्वितीय स्मृति व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. एल. कारूण्यकरा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, विशेष अतिथि के रूप में डॉ. एम. एल. कासारे, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र मंचासीन थे।

विश्वविद्यालय के डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र की ओर से गुर्रम जाशुवा सभागार में पांच जनवरी को डॉ. कौसल्यायन की जयंती समारोह को आयोजन किया गया। भदंत

गुणसिरी ने डॉ. कौसल्यायन के जीवन और कार्यों पर प्रकाश ड़ालते हुए उनके द्वारा लिखे गये ग्रंथ एवं हिंदी तथा बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार में उनके योगदान को याद किया।

विशेष अतिथि के रूप में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि डॉ. कौसल्यायन ने अपना

जीवन मैत्री और करूणा का संचार लोगों में करने के लिए लगाया। उनकी सम्यक दृष्टि से उन्होंने मैत्री

भाव को महत्वपूर्ण माना था। अध्यक्षीय उदबोधन में प्रो. कारूण्यकरा ने डॉ. कौसल्यायन के कार्य को याद करते हुए राष्ट्रभाषा, बौद्ध धम्म और साहित्य के लिए उनके योगदान को महत्वपूर्ण माना। डॉ. कासारे ने कहा कि डॉ. कौसल्यायन ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की नींव डाली। वर्धा में रहकर उन्होंने हिंदी की सेवा की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र के प्रभारी डॉ. सुरजीत कुमार सिंह ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अध्यापक, अधिकारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।